मा॰२०॥ नि ३

विषुवाद्मासे रव॥ चन्द्रा १ नेत्र २ द्व पः चन्द्र १ खां० श्रा ६॥ पुनर्द्विघ्न न्दा २ ह्न गारो षु ५० ल ध्वं शीतांशू केन्द्रं तत्कृतं प्रकूर्यात्॥ तो प्रत्यहं स्फुशत सच्च यबं द्वा भोग्यो मन्दे यां शैः सहितः स्फुट स्यात्। ८॥ अस्यार्थः॥ दिनगन धरव नवे ९० के सनेगू राव पुनि ३।३।१५ डु ध्रुवा जोरि दे पुहे व व दिनगराधर व एकशै १०० के सनेगू राव केन्द्रुक र ध्रुवा जोर व पुनि सता ३।३ से छप्पन के २०५६ सने सो धरव केन्द्रु० तव पुनि चन्द्रमा सो धरव चौविस सै सताल न २४५० के सने पुनि जे शेष रहे से रहै दे व। पुनि दिनगराधरव एकसै बीस १२० के सने भाग लेव जे पाई भाग से चन्द्रमा ह जो रि दे व पुनि भागा वरा छूक रह छ व म हि नाम यादि हिन करव॥ मेष ० वृष १ मेथुन २ कर्क २ सिंह १ कन्या ० पुनि तूला दि छव म हि नाहि जो रि दे व पुनि भाग व राह्रु क्रम शे॥ तूला से॥ वी छ १ नेत्र धनु २ मकर २ कुंभ १ मीन ० पुनि दिनगन धरव पचास के ५० सने भाग लेव जे भाग पाइ से पाला २ तितास केन्द्र मा शह जो रि दे व॥ तव एकसै के १०० सने केन्द्रुक नव भाग लेव रवराश अनु रवि राश व

न्द्रमा कन लेव पहि लेव हि लदो सनामा ह व ठाइ दे व व दो स नतीसनामा ह व ठाइ व रहि क्रमेस सम न्द्र ष राश विषें तव च्छू ट ला सं ते जे ष राशा पाइ ते हि के सने शेष जे अंक केन्द्रुक था ह से अनु ष राश के सने गूराव पुनि एक सै १०० के सने भाग जे पाई से चन्द्रमा मा ह जो रि दे व से यन्द्रमा होइ हि। ८॥ इन्दोः ख० नूपा १ गिनि ३ रसाः ६ खचन्द्राः १० नृपा १६ जिना २४ पक्ष गूराः ३५ रसाब्धी ४६ षष्ठी ६० सनागा ७५ कुन्नवा ९८ काष्ठा १०८ षड्गुनचो १२६ नाम मन्द १४३ नवाहाः १५९ पैचाच्च १०५ खांकभवो १९० द्विखाश्वि २०२। विश्वाश्वि २१३ जोत्याश्वि २२२ खभाम दस्याः २३० पंचाग्नि दृक् २३५ गोग्नि यमा २३९ कुसिद्धा २४१ नेत्राब्धि दृक् २४२ वह्नि जिना २४३ त्रिसिद्धा २४३॥० अस्यार्थः॥ इहे समर व राश अनु रवराश व माकहि॥ २८॥ भुक्तिर्नवत्यन्विता ९० भोग्य मिन्द्रोर्धोन चन्द्रा तिथयः खनन्दे ९० शेषो न रवा ङ्का ङ्गराः नागानिः ६० धाम्नयाः न तत्प्राप्ये॥ ७॥ टिका भवन्ति २९ अस्यार्थः॥ भुक्ति के हि अनुषंग के सें अनु षंग न ये माह ९० जोर व शेष

भा०टी०

श्रीकरपरदलविषेसकुनिकरराहीचतुरंघ्र नाग ३० अमावसविषेहै किंस्तघ्नपरि बाकी आदिहिहो अ इ वारि ३ करता
स्थीरहो अ २। एहिमाहसंक्रान्तिहोइ तौसमहीनोदुइहोइमलमासपरिक्षा ॥ २लावर ७ स्थीर ४ ॥१४॥ राशि॥ स्फुटा
र्क्कोद्धृरजातिलब्धं अंशं च शेषं विपृतिघ्नी ३०॥ अस्यार्थः॥ सूर्य्यस्फुट धरव दुइसेपचीसे २२५ भागलेव जेभा
गपाइ सेराशिहोइहि॥ पुनिशेषजेरहइ अंकसतीस ३० के सनेगुरावपुनि २२५ दुइसइपचीसे भाग लेवसे अं
स आइहि॥ पुनि भागलेव २२५ दुइपचीसके सनेशेष कर अंक साठिके सने ६० गुराव भागलेव २२५ सेमूहुर्त्त होइ
हि॥ पुनिसाठिकेशनेशेषगुरावभागलेवदुइसइपचीस २२५ जे भागपाई सेपालाहोइहि॥ ॥ इतिश्रीसूर्य्यः॥

॥ ८॥

अथ सारसामिमते॥ दिनेदिनेऽहर्गणा नृपयुक्तः १ सप्तैव ७ सूर्य्य वरवनन्दे ९० मिन्दोः॥ खखेन्दुकेन्द्रेतु
१०० युते प्रकुर्य्यात् प्राग्वत्स्फुटीकार्य्यतिथिः प्रसाध्य॥ १६॥ अस्यार्थः मेषादि दिनिति एकएकदीनगणा
जोरय १ सूर्यकासात ७ नित्यजोरव॥ पुनिचन्द्रमाविषेनवे ९० जोरव॥ पुनिकेन्द्रविषेसइ १०० जोरयतनव
षराशाआनुषराश लेव ओपाछंजौसेसोपलेंबाहेदीतेसेह साधव जेवअंकवहुतहोइ तव चन्द्र सोधव २४५७
केन्द्र सोधव २०५६ पुनिपछि लिहभांतिदसउपालालेव॥ १७॥ दिनेद्युतीयेचन्द्र ९ केन्द्रे वनित्यंत्य थयंच
च १॥

॥ ८॥

भा०टी०

मे ऽ धक्षि ४२॥ अस्यार्थः॥ चन्द्रमाविषेपालामाहदोसरादिनएक १ जोरवकेन्द्रमाहनितिजोरौ यइतिसाररामि॥ गतैष्य
भोग्यान्तरनिघ्नचन्द्रकेन्द्रस्यशेषवद्धतमन्तकोलब्धम्॥ २ष्षेषिकेस्वावियुतश्चहीनेभुक्तौमता स्फुटसूर्य्यभुक्तिः॥
॥ इतिश्रीभास्वत्यां तिथिअधिकार ४॥ ॥ भौमः स्वन ७ घ्नाद्युगणात्स्फुता ४ प्तपुनर्घ्र ८ घ्नकात्त्रशतात्तहीन ४॥
३०० अष्टाष्टशेष ८८ शेषः खखनामहीने ३०० ध्रुवः पक्षाब्धि २२ भिः सोमसुतस्य शीघ्रम्॥ १॥ अस्यार्थः॥
दिनगणाधरव ७ सातके सनेगुरावपुनि वारिके ४ सनेभागलेवपुनिदिनगणा धरवतिनिसै ३००
के सनेभागलेवइजे भागपाई सेवारिके भागमाहहीन कै देवतवमंगलकरघ्रुवाअंकमाह जोरिदेव
सेमंगलकनमध्यमहोइहि॥ पुनिदिनगणाधरवअठाशी ८८ के सनेशेष अंकरहै सेतिनिसैसे ३००
केसनेगुरावपुनि बाइसके २२ सनेभागलेव जेभागपाई ताहिमाहबुधकरध्रुवाजोरिदेवसेबुधकर घ्र
सीघ्रहोइहि॥ १॥ गुरुर्गुरो ३ घ्ना द्युगणा ६ घ्ना १० प्तवेदा ४४ ब्धिभिर्लब्धवियर्जितं च॥ वेदाहृ ४ तोऽधो
गुणा भाग ३ पुनर्को ४ सितस्य शीघ्रं सहितं खसक्रैः १४०॥ २॥ अस्यार्थः॥ दिनगणा धरव तिनिके स
नेगुरावपुनि ६ श १० के सनेभागलेवपुनिदिनगणाधरवपुनि चौआलिस ४४ के सनेभागले
व जे भागपाई से ६ श के १० सनेभागमाहघटाइदेव॥ तवबृहस्पतिकरध्रुवाजोरिदेवसेबृहस्पति

७

लेकर ध्रुवा होइ है॥ पुनि दिन गण धरब चारि ४ के सनते गुणाव पुनि दुइ २ दह न धरब तब तीनि के ३
सनते भाग लेव जे भाग पाई सो ऊपर का अंक माह जोरि देव पुनि दिन गण धरब एक सौ चालिस १४० के
सनते भाग लेव जे भाग पाई से जोरि देव शुक्र धुवा जोरि देव से शुक्र कर सीघ्र होइ है॥ शनि ध्रुवेन्दान्न
भ८०नकाल ध्रुवं ध्रुवान्वितार ब्युदयस्य मध्या४॥ अस्यार्थः॥ दिन गण धरब नव ८ के सनते भाग लेव जे भाग
पाई से औ सनि ध्रुवा क मध्यम होइ है॥ दिद्यु १०८ पथ कूध नो नात १७ रवाः गा सही ना ७० त्रिभिः ३ सं
५८० चाङ्कि कू जेज्य भी ध्रुवम्॥ ३ अस्यार्थः॥ दिन गण धरब दस १० गून नव सतरह १७ घटाई तब दुइ ठहर ध
रब सतार ७० के सनते भाग लेव जे भाग पाई से ऊपर का अंक माह घटाई देव पुनि तीनि के ३ सनते भाग लेव जे भाग
पाई से मंगल बृहस्पति शनि कर शीघ्र होइ है॥ बुध शुक्र कर मध्यम होइ है॥ शीघ्र मध्यम भौमादि पाँचो ग्र
ह कर भैल॥ ३॥ सू र्ध्य ध्रुवाद्दं नव भाग हीनं दवात्य जेद ऊ समन्वितो शीने॥ शीघ्र गुरोरर्कि कु जग्रहाणां
शितस्य पोस्याद्धपरंच यो क्रमम्॥ ४॥ अष्ठे ८०० षु ५०० ब ६०० नन्दे ९०० बत्तः श ता ४०० ब्धाः च थ कु ग्रहाः
षडु ३ ६०० गतै ब्ध केन्द्राः॥ रुद्रा ११ नवेन्दु १९ विषमा २२ नवेन्दु १९ उद्रा ११ श्चमो सोमे हृ वपु केन्द्रहीनाः॥ ५॥

॥ ८॥

२६

॥ ८



अस्यार्थः॥ भौमादि का मध्यम हि का जोरब समन॥ तेहि ते मंगल कर मध्यम दोसरी ठहर धरब भौमादि पाँचौ म
ध्यम दोसरी ठहर धरब मंगल के मध्यम माह ८०० आठ सइ जोरब॥ बुध के मध्यम माह पाँच सइ ५०० जोर
ब॥ बृहस्पति के मध्यम माह ६०० छ सइ जोरब॥ शुक्र के मध्यम माह नव सइ ९०० जोरब॥ शनि के मध्यम मा
ह चारि ४०० सै जोरब॥ तब जोरला जे उ बारह सै से १२०० अधिक अंक होइ तौ बारह से घटाइ देव १२००॥
तब जौ छ वसै ६०० से ऊपर होइ तौ धन कर ब मध्यम का॥ जौ छ वसै से ६०० पाँव सइ नि ना वे पहले घटाइ
केन्द्र तौ मध्यम का करा करब॥ पुनि रुद्रादि षराडा अनुषराडा लेव पाँचउ॥ ११॥ १९॥ २२॥ १९॥ ११॥ जौ छ वसैसे
६०० अधिक केन्द्र होइ तौ बारह से १२०० माह घटाइ के बंग अनुषराडा करब एक शइ के शनते १०० भाग लेव
जे भाग पाई से रुद्रादि षराडा अनुषराडा करब॥ ११॥ १९॥ २२॥ १९॥ ११॥ तब जौ हेठ कर षराडा ऊपर माह घटइ तौ
क्रम अनुषराडा होइ॥ जौ ऊपर कर षराडा हेठ माह परइ तौ उतक्रम षराडा होइ है॥ तब केन्द्र कर शेष अंक
अनुषराडा के शनते गुणाव॥ पुनि एक सौ १०० के शनते भाग लेव जे भाग पाई से भाग अनुषराडा क्रम होइ
त अनुषराडा माह जोरि देव॥ जौं अनुषराडा उतक्रम होइ तौ घटाइ देव षराडा विषे॥ घ नाग नाग त्र्यस्र

(४०)

सताइसपाव जब पाइ तब षराड़ा एगारह पाइ व अनुषराड़ा सन्यपाइ ४ए सनयोग जब होइ तब का कन बके हिके सनेगुराव
तब जे षराड़ा ११ बाट तेहि के भाने गुराव से ग्रहका स सने योगे षराड़ा के भाने गुराव जो ये ११ बाट जब एसनयोग न पाइ त
ब अनु षराड़ा हिके सनेगुराव हत उत्कुष्टादि षराड़ा अनु षराड़ा कैह की कति कह सहै पाव हु के आगे सातौ बाट हि षराड़ा ते कउ

॥९॥

ध्यनिघ्नाः १७॥७॥८॥३॥१२॥ द्वशो घ्न तं हीन धनं च मध्ये॥ व थकुस्वशीघ्रोनित केन्द्र षंड त्रिघ्नास्वशी
घ्रोनयुतास्फुटाः स्युः॥६॥ अस्यार्थः॥ पुनि भौमादि पांचौ ग्रह कर षराड़ा गुराव क्रम शे॥ मंगल कर ष
राड़ा सतरह १७ के भाने गुराव॥ बुध कर षराड़ा सात ७ के भाने गुराव॥ ब्रहस्पति कर षराड़ा आठ ८ के
भाने गुराव॥ शुक्र कर षराड़ा तीनि के भाने गुराव॥ शनैश्चर कर षराड़ा बारह १२ के भाने गुराव॥ तब
दश के १० भाने भाग लेब भौमादि पांच हु ग्रहका॥ पुनि जौ मध्यम का धन होइ तौ जोरि देब॥ जौ मध्यम
का ऋण होइ तौ घटाइ देब भौमादि का॥ मं॥ बु॥ बृ॥ शु॥ श॥ तब भौमादि पांचौ ग्रह कर प्रथम होइ॥
तब पुनि मध्यम द्वो स सै ठहर घर तब मध्यम माह आपन आपन शीघ्र घटाइ देव से शीघ्रोनि
त केन्द्र होइ॥ कदाचित शीघ्र नाहि घटइ तौ बारह सै १२०० मध्यम माह जोरि कइ घटाइब॥ आ
गे तब षराड़ा हि के भाने गुराव विधि जे हो आइ से अनु षराड़ा हि के भाने गुरौ के ग्रहका एक सनेयोगे षराड़ा हि के भाने गुराव॥ एहि
रा के जानी हि गो प्यना बब २० २ पाव नाभि नाहि॥ त्रिघ्नुकाबढ़ छानौ देषाइला ५८३ बाट पाव हि नाहि त्रिघ्नुक बढ़ ३ के त्रि

मा०१८०

पन शीघ्र घटाइ शे शीघ्र उनित केन्द्र से पुनि एक भै १०० के भाने भाग लेब षराड़ा अनु षराड़ा भौमादि पांचौ
ग्रह कर लेब पुनि पांच राशि शीघ्रोनित केन्द्र जब होइ तब अंक सत्रि ३ घ्नु क र ब षराड़ा लेब भौमादि सातौ ७ सा
तौ ७ षराड़ा लेब पुनि क्रम उत्क्रम पूर्व वत जान ... यथा के॥ भौमस्य खा ४० द्वीग स ७७ पूर्व शाः
११० देवेन्दु १३३ जातीन्दु १२ अग गो ६७ नगार्थाः ५७ रस्यक्षि २७ मनीषु ५३ कु सप्त ७१ षट्स्व
रा ७६ स्तथा तपश्चापि ३ गजु राा ३७ नवेन्दु १९॥ द्या ग्यु रो र्न पाः १६ खाग्नि ३० गजत्रयं वेदन
ख ५० नयो ३६ राम यमा २३ न्नपा द्धा: २६॥ ६॥ भ गो र्द्वि वेदाः ४२ कुभ जो ८१ खसप्या १२० व्योमाह
१५० नागेन्द्र १४८ भभू १२७ त्रिशैलाः॥ ७३॥ ७॥ शनि र्द्वि २ तो ६ वाः १०॥ १७॥ कुयमाः २१ नवेन्दु १९
द्वि भ मयो ९२ मेंढु ल ८ म ध्य भ्रच ४॥ ८॥ अस्यार्थः॥ क्रम षराड़ा होइ तौ जोरि देव॥ उत्क्रम
षराड़ा होइ तौ घटाइ देव॥ तब जे अंक होइ से अंक मध्यम विषे जोरि देव॥ जौ शीघ्रोनित के
न्द्र ऋण होइ॥ जौ शीघ्रोनित केन्द्र गत होइ तौ अंक घटाइ देव मध्यमाह॥ भौमादि पांच उग्र

ह काइहै विधिहौ अइ ॥ तव स्फुट ग्रह भौमादि होइहि ॥ ८ ॥ भादिः क ४ तद्युतो ऽ द्रु ः हृतः सराशिः रास्यादिमद्रैः ः
गुरितातक्रमेरा ॥ ७।८ ॥ अस्यार्थः ॥ मं । बु । बृहस्पति । शुक्र ॥ शनि । सेरा स्यादि आबैलहि तेहि ते राश्यौ दि पु
पुनि सूर्य्य । चन्द्र । राहु । केतु ॥ वारि ग्रह भादि नत्रादि आवैलाहि ॥ तेहि ते भादि ४ पुनि राशि अंस द्दराऽपालो
क रोला ॥ भौमादि स्फुट धरयतव एक सइ १०० केश ने भाग लेव जे भागपाई से गत गम्यराशि होइहि ॥
पुनि जे शेष अंक रहइ तेहि ती से ३० ग्यारावपुनि एक शौ केश नो ग्यारा भाग लेव जे भाग पाई से अंस होइहि ॥
पुनि शेष अंक जे रहै से साठि ६० के स नो ग्याराव एक से के शने भाग लेव जे भाग पाइ से द्दराउ होइहि ॥ पुनि
शेष अंक साठि ६० केश नो ग्याराव एक सइ के शनो भाग लेव जे भाग पाइ से पाला होइहि ॥ इह इतरहरा
स्यादि सभ का करवे ॥ भादि रवि चन्द्र ॥ राहु । केतु कर स्फुट धरव वारि के ४ श नो ग्यारावनौ केश ने भा
ग लेव जे भाग पाइ से अंक रादि स्यादि होइहि एहि चन्द्र राहु केतु कर स्फुट ॥ पुनि रास्यादि जो नक्षत्र
गत कहीतो स्फुट भौमादि धरयतव न व८ के श नो ग्याराव पुनि वारि केश ने ४ भाग लेव जे भाग
पाई से नक्षत्र गत होइहि ॥ इहइ सर्धत्र हो अइ ॥ विश्वा १३ शिव ११ गन्धर्व । ७ ॥ दश १० रु ६ ॥ मा





से श्वक्राई चक्रं क्षिति सूनुम् ॥ अस्यार्थः ॥ वक्र कही अस्त के जब मंगल अस्त होथित बसैं तेरह १३ मही
ना उपर मंगल वक्री होवेला ॥ जब बुध अस्त होथित बसै दुइ २ महीना उपर वक्री होइला ॥ जब बृ
हस्पति अस्त होथित बसै सात ७ महीना उपर बृहस्पति वक्री होइला ॥ शुक्र होइत बसै दश १०
महीना उपर शुक्र वक्री होइला ॥ जब शनि अस्त होथित बसै छव ६ महीना उपर शनि वक्री हो
इला वक्र ते ऽ द्दु वक्र होइला ॥ अर्द्ध वक्र को ऽर्थः ॥ वक्री ॥ भौमादि विचारः ॥ षड्गनयो ३६ द्वादशा १२
रासभार्था ः ५६ वेदाश्विनः २४ सप्तरसाः ६७ क्रमेरा ॥ स्वशीघ्र केन्द्र स्यनमयऽला द्वु पूर्वापरा
वक्रयवाः सैस्यु ॥ ८ ॥ अस्यार्थः ॥ जव ॥ मंगल ॥ बुध । बृहस्पति ॥ शुक्र ॥ शनि कर शीघ्रोनि
त केन्द्र छव सै ६०० पूर होइत वसे आगें औ पीछे वक्री जानव ॥ मंगल छत्तीस दिन ३६ आ
गे छत्तीस दिन पी ३६ छे वक्री होइला असं कै वहत्तरि दिन मंगल ७२ वक्री होइला ॥ पुनि बुध
६०० बारह दिन १२ आगे बारह १२ दिन पीछे असकै चौविश २४ दिन वक्री होइला ॥ बृहस्य

ति ६०० छपन ५६ आगे छपन ५६ दिनपीछे असके एकसइवारह ११२ दिनवक्री होलहि॥ शुक्र ज
व छवसै ६०० तवसे चौबीश २४ दिन आगे चौविश दिन २४ पीछे असकै अठतालिस दिन ४८ वक्री
होइला॥ पुनि शनि जव शीघ्रोनितकेन्द्र छवसै ६०० पूर होइला तवसे सतसठि दिन ६७ आ
गे सतसठि दिनपीछे असकै एकसौचौतीश १३४ दिन शनि वक्री होइला॥ एकरे आगे सेतवमा
र्गी होइला॥ ८॥ षष्ठ्य ६० छि १६ भूपा १६ गगुरा ३७ कुदस्रा २१ श्वक्रादितः प्राक् परतोऽ
स्तश्च स्याः॥ अस्यार्थः॥ जव शीघ्रोनितकेन्द्रसून्य होइ ०० तव भौ साठि दिन ६० आगे साठि ६०
दिनपिछे मंगल अस्त होइ असकइ एकसइवीश १२० दिन मंगल अस्त होइला॥ पुनि वुध ज
वसे ०० तवसे सोरह १६ दिन आगे सोरह दिन पीछे असकइ वतीश ३२ दिन अस्त होइला॥ वृ
हस्पति ०० तवसें सोरह १६ दिन आगे सोरह दिन १६ पीछे असकै यतीस दिन वृहस्पति अस्त रहै
लहि॥ ~~पुनि जवसे~~ शुक्र जवसे ०० शून्य तवसे सैतीस ३७ दिन आगे सैतिस दिन ३७ पीछे अस
कै चौहत्तरि ७४ शुक्र अस्त रहइलहि॥ पुनि जवसें शनि शीघ्रोनितकेन्द्रसून्य ०० होइ तेहि धरि



से एकइश २१ दिन आगे एकइसे दिन पीछे असकइ वायालीश ४२ दिन अस्त शनि रह
इलहि॥ पुनि उदै लैलहि॥ एवं खाभ्र ०० वोर्वसु ८८ पंच ५ षड्गा ६ प्रागूनः खिटः परतोऽधिकोऽ
कीत ९०॥ अस्यार्थः॥ जव शीघ्रोनितकेन्द्र छवसे ६०० सेपूर होइ तवसहित रहवु वुध अस्त
होइला आठ ८ दिनः आगे आठ दिन पी[illegible]छे असकइ सोरह १६ दिन अस्त रहइला॥
पुनि शुक्र ६०० छवसै तवसे पाचदि ५ न आगे पांच दि ५ न पीछे असकै दश १० दिन अस्त शुक्र
होइला वुध शुक्र कर अस्त जानवउ अउ प्रकारः॥ आगे पुनि उदै होइहि॥ पलप्रभा॥ प्र४श
तत्व २५ हताखरवाङ्क ९०० भक्ता स्फुटा र्क्ष राससमायदि स्यात॥ ततो दयावै भवितामह र्षेर् ग
स्त्य नाम्नाद्रि भिद्दक्षिणास्यात्॥ ९॥ अस्यार्थः॥ जवदसै सै तेतालिसपाला १०४३ पैतालि
स ४५ सूर्यकर स्फुट होइ तव अगस्ति कै उदै होइहि॥ सिंहकरवी २० २१ अंसापर उदै होलै॥
पुनि केविपुर कर मनुष्य छवीश २६ अंशा है व्यहि पुनि अंठाइश २८ अंसापर काश्मीर
काश्मीर कर लोग देषिहि॥ पुनि कन्याके सूर्यसभदेशाकर लोग देषिहि॥ ९॥ घना १७

17

गर्भ नागर जय ३ सूर्य १२ रवि १२ बुध मन्दके भोगाह ता[illegible]: रवशातापृ १००० ल ध्वा॥ दुनेनु
घरोड सहित तोन्य थोनाम मन्दस्फुट ३ ठन्त्रिके रियुं कुजाहे:॥ ७॥ मन्दस्फुट ३ शीघ्रगतो विशो
ध्याप्य ग्रहस्फुटतामो सहित भुक्ता १०० प्रा॥ वक्रस्य भोग्ये स्वमृ राांचे कुर्या ८ वक्रातिचारे विप
रीतिशोध्या:॥ ८॥ अस्यार्थ:॥ भौमादि मन्दके मध्यम औ शीघ्र मन्दकी धरब मंगल कइम
ध्यम मन्दकी १।४५। शीघ्र मन्दकी ३।१७। बुध कइमध्यम मन्दकी ३।१७। शीघ्र ३।२८। बृहस्प
तिमध्यम ००।१७। शीघ्रगति ३।१७। शुक्र कइमध्यमगति १७ शीघ्रगति ५।२०। शनिकइ
मध्यम [illegible] गति ००।६। शीघ्रगति ३।१७। अब गुणाकार कहितहइ भौमा
दि सभकर मंगलो १७। बु।७।५८। शु ३। शनि १२। तेहितें मंगलके मन्दकी धरब १।४५।
सतरह १७। के भाने गुणाव पुनि बुध ७ गुणाव। बृहस्पति ८ गुणाव। शुक्र ३ तीनी
गुणाव। शनि बान है १२ गुणाव मध्यमगति सभकै॥ पुनि पहिला अनुघराडा के भा
नो गुणाव पुनि एक हजार १००० के भाने भाग लेव जे भाग पाई समध्यमग





~~तिसभके॥ पुनि पहिला अनुघराडा के भाने गुणाव पुनि एक हजार १००० के भाने भाग लेव जे भाग पा~~
ई तिमाह जोरिदेव जौ उतक्रम अनुघराडा होइ जौं क्रम अनुघराडा होइ तो मध्यमगतिमाह घटाइदेव
भौमादि सभकाम्॥ से मन्दस्फुट मन्दकी होइहि भौमादि। पुनि मन्दस्फुट मन्दकी अपनी अपनी शीघ्र
गतिमाह घटाइदेव सेकेन्द्र मन्दकी होइहि। मं ३।१७। पुनि जो पाछिल शीघ्र [illegible] केन्द्र [illegible] ३ के लहो
इ होइ [illegible] कर ३। नाही तौ नाहि पुनि दोसरे अनुघराडा के सन्ते गणाव एक से १०० के भाने भाग
लेव जे भाग पाई से जौ क्रम अनुघराडा होइ तौ केन्द्र मन्दकी माह जोरि देव॥ जो उतक्रम अनुघराडा
होइ तो घटाइदेव। जौ क्ष[illegible] की होइहि विपरीति घटीहि औ अतिचार होइहि तो विपरीतै घटीहि
से केन्द्रगति होइहि। पुनि तेहि गतिके भाने भाग लेव ग्रहकर स्फुट [illegible] जे भाग पाई ततनाहि
न उपरि दोसरी राशि ग्रह जाइहि। पुनि दोसरी जेतना स्फुट मन्दकी भैलि होइ से धैके भा
ग लेव तौ पाछिल ग्रह जानव॥ जएतना हिन भै [illegible] भैलि राशि दिनद्राउ पाला सभकर
ग्रह नह करेइ हऊ समाचार ॥ ॥ इति महाविचार: कथित:॥ अथ मतान्तर श्लोकौ

वेदाब्धनार्के।४।१७।इन्दुवटीरवतर्के६०भौमत्रये३।वन्द्रजतर्करवाब्धी।द्वि।४०।गुरोः खजातिः।००।२२।१९ गुवान ५ अक्षं२०।शनिः खखेदा।००।६।खतिथेवराहुः।०।१५।अर्क्क दिनवग्रहरो जन्मनि ऽऽंशापलास्फुटकै।।द्विघ्न द्युमध्यभि ८ गुरांपततोऽशांद्वि गिमरारत।।ध्रुवायुक्तौ द्वि२ भागं चपोतः स्वायक्रमोऽद्भुतः।।१।।अस्यार्थः।।दिनगरााधरन आठके ८ शान्ते गुराव तवद्शाके शान्ते १० भागलैव जे भागपाई सेराहुका ध्रुवा माह जोरि देव।पुनि दुइ के २ शान्ते भागलैव जे भागपाई से सताइश सै२७०० माह घटाइ व सेराहु कर स्फुट नक्षत्र गत होइहि।।१।।पातः भानयैनं कार्य्यं भयक्राद्धु विशोधयेत।।गरानीवाः प्रयत्नेन केतोर्नयनं शुभम्।।२।।अस्यार्थ।।राहुकर स्फुट धरव पुनि तेरसै पचास१३५० घटाइ देव से केतुकर स्फुट होइहि।।जौ कदाचित न घटै तौ शताइश सै२७०० स्फुटं माह जोरि कै इतव घटाइव १३५० से केतुकर स्फुट होइहि।।३।।चैत्र कृष्ण परिवा जेहि वार होइ। सेराजा अब्दका परिवा होइ।।पुनि मेरव कै शंक्रान्ति जेहि वार होइ से मंत्री तेहि वर्षकर होइ।।वृषभ कै संक्रान्ति जेहि वार होइ सेजलाधिपहोइ॥



कर्क कीसंक्रान्ति जेहि वार होइ से सस्याधिपहोइहि।।शाके धरव पंद्रह १५ जोरव।।वारिके ४ शान्ते शेष की सेमेघ केर रानाम होइहि।।जौं शक १ रहै तौ आवर्त्तक होइ।।जौ२ दुइ रहइ तौ समावर्त्तक नाम होइ।।जौ तीनि र३ हैइ तौ पुष्कर होइ।।जौ ४ रहइ तौ द्रोरानाम होइ।।ताकर फल कहीला॥ आवर्त्त कोम ध्यमा वृष्टिः समावर्त्तोम्बुपूरेकः।।पुष्करे दुष्कर वृष्टिः द्रोरो वृष्टि निरन्तरम्।।२॥ अथ नागराना।।साकमिन्दु१४ युतं कृत्वा सूर्य्यैनै १२ भाजितम्।।सनागस्तु विज्ञेयं स्तु बुध्यादि यथाक्रमम्।।१।।स्तु बुद्धौ१ नन्दसानंव२ कन्याध्यक्षः पद्मश्रवा।।४।।वासुकी५ तक्षकं वैवर्द्धकल हंव७ तपाम्बुजः।।८।।हेमाली ९ विलम्बं च १० आवर्त्तव ११ वाञ्छिद्रिकः।।१२।। ःः इति श्री भास्वत्यांग्रहाधिकारः चतुर्थः।।४।। ० ।। ध्रुवनन्दतोऽगाब्दकुभिर्ग्र१८७० जाब्दे०१७८ स्वस्योगते ब्योतरद क्षिरोतु।।ततः खशामं३० क्रमशः भवद्घात्साद्धं सषष्ठं वदलं वराद्धुम्।।१।।अस्यार्थः॥ दिनगराा धरव अपराजोरि १८ हैव तव एकशद्धु सताइशिके शान्ते स्वल्यकर वेगात ए ब्य३ तं र औ दक्षिरा१७८ गोल छव छव ६ मासकर जांय।।तव जे स्वल्य यरहइ से गंक धर

वपुनितीस ३० केशनो भागलेव क्रमशो ॥ जौतीस केशनो भाग ० शून्य ० पाई तौ जे अंक शेष बाठ शेषअं
क औ अंक कर आधा एक ठर हर कर वसे वराडु होइ ॥ पुनि जौ एक भाग १ पाई तौ पैतालिस ४५ पा
वलजानव औ शेष अंक जेवाट से औ ओ कर ० ठव ६ वबर पैतालिसमाह ४५ जोरिदेव वराडु
होइहि ॥ जौ पुनि तीस ३० केशनो दुइ २ भाग पाई तौ पैतालिस ४५ औ पैतीस ३५ जोर वसे वराडु हो
इहि ॥ औ जे शेष अंक वाठ ताकर आधा वबरा जे पाइ से लेवत बशभए एक ठौं जोर वसे वराडु होइहि
४५।३५।१॥ पुनि जौं तीसि ३० केशनो तीनि ३ भाग पाई तौ पैंतालीस ४५ औ पैतीस ३५ औ जे शेषक
र आधा वाट से सम अंक एक ठौ करव ।४५।३५।१५। से वराडु होइहि ॥ पहिले हं एक शै सताशी १८७।
केशनो स्वल्पकरव एक सइ सताशी १८७ दिरागराले हि ॥ पुनि दोसर गोल एक सइ आठहत्तरि के
शनो १७८ स्वल्पकरव एक सइ आठहत्तरि १७८ दिरागरालेहि। पुनि ॥ ध्वैपजानव ॥ सा हेद्यान
वे दे ३० से अधिहीं की वराडु नाहि होइ ॥ एहि क्रमस भाद्दिनगरा कर वराडु आनव ॥ १ ॥ पलप्रभाघ्न॥
४५। धृशरषट्‌यमा ।२६५। प्रखेन्दु १५ तास्वमरा ख्यगोलात् ॥ अर्हे दंलंव्यस्तमितो निशाईद्



तयोर्ज्तितैष्यन्तरितं नतख्य ॥२॥ अस्यार्थः पलप्रभापा ख्य पैंतालीस ४५।४५।४५। तिनि ठौ धरव जौ अं
शपाला जो पालाव होइ रौ तु ६२ ठहर धरव तव वराडु केशनो गुणावतवदुइ सैपयसठि २६५ केशनो
भागलेव दराड पाला जे पाइ स उत्तर गोल होइ तौ जौ रिदेव पंद्रह १५ माह जौं दक्षिरा गोल होइ तौ वु
ढाइ देव। पंद्रह १५ माह से दित्य डु होइहि ॥ पुनि दिन जे दराड आधि आइ कै निशाडु करव ॥ एवं सर्वत्र॥
३६५। तीनि सइपयसठि दिन ॥२॥ षड्वृंद वराडु पथके दश १० भागहीनं सौम्यं जाम्यं तु राम अयुतं
दशा १० प्रम्न ॥ तदक्षिरा २ हीनाक्षि ॥५८।२२।५८।२२॥ विभृतौ पुतं भानोउद्गदक्षिराातः प्रभास्यात् ॥
क्षापाद शधृा सत १०० संभुतावम ध्यप्रभोना भवती हधृडुः ॥ शाता १०० हताहे दलत स्तदाप्तं महर्ज
तारव्योक्षहिका दिवालं ॥ खखेन्दु १०० ॥ निघ्ना दिल क्षाद्वते घ्नना साप्तम ध्यप्रभपासमेतम् ॥
शतोन्धि १०० तं तद्दशभि १० विभिक्तं लब्धांगुला घ्नाः भवती स्फिरताभा ॥४॥ लंगनतं स्फुर्ष्यो
दयतः प्रशाध्यं स्वभोदयै शौरनिनान्घेतम् ॥ चन्द्रास्वि निघ्ना ॥२१॥ पलप्रभा ५।४५। दिन
वेलक्षा वधे स्या दिहदक्षिरातोक्षः ।६०।२२॥ अस्यार्थः ॥ जे हि नाशि कै संक्रान्ति होइ

ताहि करि उन्नि जे होइ से जोरि दे प्रानिति करु तब लग्न आनव ॥ भोग्य छुन्नि माह हीन धनकर बनबस्य र्यो द्रूपत हजे तनाद्दराउपर बढ यत्ते जे लग्न आवइ से प्रमान हौ अ इष्टु निचनाइ के कहि ला ॥ जेहि राशि कइसं क्रान्ति होइ तेहि राशिहि साठि ६० गुरा यतयती से ३० ले पभाग जे भोगपाई से तेत नानित्य वटाइ लायाहि दिन क्रान्ति होइ ताहि दिन ले हे यटोर बत बद्दराउ कर के सेपुनि सूर्य्य की लग्नेमा हथ्र घटाइ विसे लग्न ह ३ अ २ ॥ येथी प्रश्न होइ ताहि दिन ले हे य टोरवत बद्दराउ कर क्र सेपुनि सूर्य्य की लग्नेमा हथ्र घटाइ विसे लग्न ह ३ अ २ ॥ येथी प्रश्न होइ ताहि दिन लेहे य टोर ... रवे भो स्वांशका न्हत्वा सोदये खगु रोर० भजेत ॥ लब्ध्वा भोग्य विष वाढते तना लग्न आवरि वाहि ॥ रवेर्भोस्वांशका न्हत्वा सोदये खगुरो ३० भजेत ॥ लब्ध्वा भोग्यवि षवाढतेतना लग्न आवरि वाहि ॥ प्रश्ने गतविनाडी षु सो ध्या भोग्य विनाडिका ॥ रवौ लग्नांशकान्ह नाप्य स्त्र रवे लग्नगतांशकात ॥ प्रश्ने गतविनाडीषु सोध्या भोग्य विनाडिका ॥ रवौलग्नांशकान्ह नाप्य स्त्र रवे लग्नगतांशकात ॥ प्रश्ने गतविनाडी... १००प्रक्षिप्य शोधितात् राशींशे षरवाग्निः हतं भजेत् शोर्द्धपे न ततो लब्धं त्वा शोधयेत् शोदयाशतः ॥ १०० प्रक्षिप्य शोधितात् राशीशेषरवाग्निः हतं भजेत् शोद्धपेनततोलब्धं क्षिप्तालग्ने भवेद् द्विः ॥ द्विगुणांवर। विधुवक्षाया। ५।४५ ॥ विभजेत् क्रमशस्त्रिधा ३ स्वर्पाह १२।१५। वस्वक्षि। २७८। नन्दनन्दा श्वि। २९९। त्रिरदस्त्र ३२३ क्रमो बहुरो ३६ ध्रुवं चरखण्डा विनाडिका ॥ वस्वक्षि। २७८। नन्दनन्दाश्वि। २९९। त्रिरदस्त्र ३२३ क्रमो त्क्रमात्। ३।३। चरखण्डान्वितं भूर्णक विनाओ उजाद्दिको द्यात ॥ १ ॥ मानपालाशाशिपक्षयमा ॥ ॥१५ ॥ २२१। मेषे ॥ गुणा पक्षयमा वृषे। २५३। मिथुने ऽक्षिवियद्दू

॥:०:॥ ॥:०:॥ ॥:०:॥

मा। ३०४। कर्कटे द्विस्तातागनयः ॥ ३४२। सिंहेपञ्चाब्धि वन्हि पस्तू। ३४५ कन्यायां चासो गुराागनयः। ३३५ मेषादिक्रमतो ज्ञेया तुलादौ च उत्क्रमात् ॥ ७ ॥ ॥ इति श्री पद्मसिद्धान्ते त्रिप्रश्नाधिकारः पंचमः

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मे | ७ | पा | २२ | वि | वृ | ८ | पा | २६ | वि | मि | १० | या | ८ | वि | क | ११ | या | २४ | वि | सिं | ११ | पा | ३० | वि | कं | ११ | पा | १० | वि |
| तु | ११ | पा | १० | वि | वृ | ११ | पा | ३० | वि | ध | ११ | या | २४ | वि | मं | २० | या | ८ | वि | कु | ८ | पा | २६ | वि | मी | ७ | पा | २२ | वि |
| मे | ३ | दं | ४१ | पा | वृ | ४ | दं | १३ | पा | मे | ५ | दं | ४ | पा | क | ५ | दं | ४२ | पा | सिं | ५ | दं | ४५ | क | ५ | दं | ३५ | पा | |
| तु | ५ | दं | ३५ | पा | वृ | ५ | दं | ५५ | पा | ध | ५ | दं | ४२ | पा | मं | ५ | दं | ४ | पा | कु | ४ | दं | १३ | पा | मी | ३ | दं | ४१ | पा |

आषाढ सुदि। सम्वत १८७२ ॥ साके १५७७ ॥ दिने २००२ ॥ पाता ध्रुवा ८६१ ॥ ५१ परवद्दराउ ॥ ३२।४८। रवि। ७२४ ॥ १६ ॥ (२) ॥ चन्द्र ॥ २०२९ ॥ ४ ॥ (००) ॥ हि विबुरवि १४ ५६ ॥ ४४ ॥ तम १०७१। ५१। सौम्यशरा ॥ १५४। १७। चन्द्रमान ॥ ८७। ००। तमोमान। ११७। ३० मान हं यपोग। ३०४ ॥ ३० ॥ मानार्द्ध १५२ ॥ १५ ॥ सर होइ जहुतमा नार्द्ध होइ थोरा नाही गहराइ है मत मोराइ निश्चय ॥ आन वार रवि ८ ३ । १२ ८। ३ ॥ दिन ११ ५। चन्द्र। ८२२ ॥ पल। १६ ॥ पर्व द्दराउ। ५। ८। दिनार्द्ध। २६। ५१। सौम्यनत ११। २७ ॥ सौम्यनत ११। ४३ होलान तेव भालीए गारह ११। सताइस २७ उपर आनइ शिषी ॥ प्रथमलम्बन। ३। १३। द्वितीयनत १४। ४० द्वितीयलम्बन ३। ४७। तृतीयनत १५। १४। तृतीयलम्बन ३। ५१। तृतीयनत १५। १८। सौम्यलम्बन ३। ५३। सौम्यनत १५। २०। स्पष्टर

खाङ्कध्रुव ८ स्थिर। सौम्यनत १३८०।००। द्विरध्रुवरवि १६६४।१३। द्विध्रुव रविखाङ्क निघ्नोनित ६० २८४।१३। सौम्यप्राचीशर
२५५।४८। नतांश २।३३। अधिक युद्ध १३।३३। एक र भाग जे पावल हाहिसे १८।५१। सौम्य नति ॥ ४१॥ ३०॥ द्विगुरितलम्ब
न ॥ ३८॥ ५०। गुणाप्तलम्बन ॥१॥५६। गुणाप्तहीन द्विरध्रुवरवि ॥ १६५१। २७। तम । २०८३। ५१। तमरविचुति २७३५।
८॥ याम्यशर। ३१। ३८। स्फुटसर ॥ ५२। रविमान। ६६॥ चन्द्रमान १०३। मानद्वययोग। २०२। मानार्द्धयोग ॥
१०१। ग्रास ॥ ६१॥ ८। स्थिति मर्द्द खार्द्ध ॥ ३। ०० ॥ सूर्य्य ग्रहणा एहि तरह ॥ श्रीगणाधिपत
ये नमः ॥ ० ॥ अथ भास्वतीमते ॥ सम्वत् ०॥ शाके ० ॥ समये अमुकमासवदि अमावास्यां सूर्य्य ग्रहणं भ
विष्यति ॥ रविध्रुवा ॥ चन्द्रध्रुवा ॥ केन्द्रध्रुवा ॥ पातध्रुवा ॥ भास्वत्यहर्गणा ॥ रविखण्ड ॥ १॥ चन्द्रखण्ड
॥ १॥ अस्फुटरवि ॥ अस्फुटचन्द्र ॥ पर्वखण्ड ॥ द्विध्रुवरवि ॥ तमवर ॥ दिनार्द्ध ॥ नत ॥ स्थिर लम्बन ॥ युत
नत ॥ नतसर ॥ अधिकयुद्ध ॥ अधिकयुद्धभक्त ॥ अवनति ॥ तमशर ॥ स्फुटसर ॥ रविमान ॥ चन्द्र
मान ॥ मानयोगार्द्ध ॥ ग्रास ॥ स्थित्यर्द्ध ॥ दिनगतस्पर्श ॥ दिनगतमध्य ग्रहणम् ॥ दिनगतमोक्ष ॥



चन्द्रग्रहणाकरक्रम अवभाषी ॥ मानयोगार्द्ध ॥ अस्फुट रविदुइ गुणाकै राखी ॥ पुनि चक्रेर खण्ड जे
होइ ॥ चारि भागि कै मेर बैइ सोइ ॥ रवि स्फुटाप्त युत ताकहु कही ॥ आगिल अङ्क कहउ अवसही ॥ द्विध्रुवर
वि ॥ बुहि अन अस्थिर मन होय रही ॥ अठ गुणा कै पुनि दिनगण गही ॥ दस भागित मध्रुवा मिलाइ ॥
ताकर नाम तमै पुनि पाइ ॥ तम ॥ दिनार्द्ध बीठिका दर्श धारि तं वप थक प थक ॥ योय त्रापि छठ नेवन
तं नामानि कारयेत ॥ तिथिर्ध्या तिदिनार्द्धं नतं स्ये पं तदुत्तरम् ॥ दिनार्द्धं पर्वम ध्येतु नतं याम्यं पदात
द्व ॥ नत ॥ दुगुन भानु पुनि तम पर मान ॥ पछि लिहि परि जाति अनत मान ॥ पहिले हती राउ ले
व गणाइ ॥ आगिल आंक कहउ समुझाई ॥ नताद्द शाप्ता जिन षड्गनताप्तं तद्भ्रम्बनं तेन युतं नतं ॥
तारवाङ्क निघ्नो नयुतस्य भानोः प्राचीप्रतीच्यो श्चसरप्रसाध्य ॥ नतस्यानहु येध्य खापूर्वी सपलयो
द्ध भाभिः संगुणाय ॥ अधःस्थानस्य अंशापलयोः अंशे वर्तार्धे शिति जो जयेत ॥ पूर्वस्य षष्ठि ६० गुणा
येत ॥ अधस्थानस्य षष्ठि ६० गुणायेत ॥ अधःस्थाने यदङ्कं वर्तते तेनैवांके नोपरि स्थाङ्कः तस्य
भागः स्फुपते लब्धं यत तद्धम्बनं भवति । तेन युत नतं कुर्यात् तामुद्धम्बनं भवति ॥ पुनर विपुत

॥२८॥

लम्बनस्थानद्वये धनत्वात् पूर्वांशपलयोर्द्वित्रिंशत् ७० संगुणयेत् ॥ अधस्थानस्य अंशपलयोः अंशे यन्नवर्विंशतिं जोजयेत् ॥ पूर्वस्य षष्ठि ६० गुणयेत् ॥ अधःस्थानस्य षष्ठि गुणयेत् ॥ अधःस्थाने यदंकं वर्तते तेनैवांके नोपरिस्थोऽङ्कः तस्य भागः ॥ फलं पतेल्लब्धं यत् तत् लम्बनं भवति ॥ तत्प्रथमनते जोजयेत् स्पष्टलम्बनं भवति ॥ पुनरपि स्पष्टलम्बस्थानद्वये धनत्वात् पूर्वांशपलयोर्द्वित्रिंशत् ७० संगुणयेत् ॥ अधःस्थानस्य अंशपलयोः अंशे यन्नवर्विंशति जोजयेत् पूर्वस्य षष्ठि ६० गुणयेत् ॥ अधःस्थानस्य षष्ठि ६० गुणयेत् ॥ अधःस्थाने यदंकं वर्तते तेनैवांके नोपरि जोऽङ्कः तस्य भागः फलं पतेल्लब्धं यत् तत् लम्बनं भवति ॥ तत्प्रथमनते जोजयेत् स्पष्टलम्बनं भवति पुनरपि स्पष्टलम्बनस्थानद्वये धनत्वात् पूर्वांशपलयोर्द्वित्रिंशत् संगुणयेत् अधस्थानस्य अंशपलयोः अंशे यन्नवर्विंशति २४ जोजयेत् ॥ पूर्वस्य षष्ठि गुणयेत् ॥ अधस्थानस्य षष्ठि ६० गुणयेत् ॥ अधःस्थाने यदंकं वर्तते तेनैवांके नोपरि जोऽङ्कः तस्य भागः फलं पतेल्लब्धं यत् तत् लम्बनं भवति ॥ तत्प्रथमनते जो जयेत् स्पष्टलम्बनं भवति पुनरपि स्पष्टलम्बनस्थानद्वये धनत्वात् पूर्वांशपलयोर्द्वित्रिंशत् ७० संगुणयेत् ॥ अधःस्थाने यदंकं वर्तते तेनैवांके नोपरि स्थोऽङ्कः तस्य भागः फलं पतेल्लब्धं यत् तत् लम्बनं भवति ॥ अस्थिरलम्बनं ॥ अथ व धनपतिः ॥ नतपलमान ठावदु इरु धरिअ ॥ ०

भा०टी०

पलहि लिठावदस गुणाकरीअ ॥ हेठ जोरियौ विशले इहीअ ॥ तेंहि इहे हे ऊपरि हरि लीअ ॥ लब्ध आंक पहिला नत लाउ ॥ शेष लेइ पुनि दुइ ठाव धरउं ॥ ताहि आदि हो दश गुणाकर ॥ चौविस जोरि शेष हेठ विचार ॥ हेठ आंक ऊपर हो भाग ॥ पाव लपुनि आदि नत भाग ॥ तवे धार पुनि नत आनि अशोइ ॥ जव धरि गौ पष्ठि लासम होइ ॥ पष्ठि लासम गराइ तजे आउ ॥ ताहि धरि अस्थिर लम्बन नाउ ॥ अथावतुलसीराम ॥ नत दुइ ठाउ लिखव कसो जानी ॥ एकदश गुणा लीखि कै वानी ॥ चौविस जोरि दुजे से भागी ॥ ना उपु लम्बन ताके दागी ॥ शेष उपु लम्बन नत मह जोरि ॥ दुइ ठाउ कै लिखि एसो री ॥ एकदस गुणा लीखि कै वानी ॥ चौविस जोरि दुजे हि आनी ॥ पुनि दुशेजोरि नताहि के देइ ॥ वार वार क्रम उह इ लेइ ॥ तवलाहि क्रम पुनि ऐ करी ॥ जव लहि थिर लम्बन के धरी ॥ थिर लम्बन ताहि के कही ॥ वहुत वारे आने उ जे गोहि ॥ एकोपल नहि घटि वटि आवे ॥ वार वार पुनि ओ तनै पावै ॥ अस्थिर लम्बनं ॥ नत अस्थिर लम्बे जो जयेत् अस्य नाम स्पष्टनतो भवति ॥ स्पष्टनत ॥ नत थिर लम्बन करि अै जोर ॥ स्पष्टनत नाम लिखहु मतिमोर ॥ तोरखाङ्कु निघ्नो नयुतस्य भानोः प्राचीप्रतीच्यो श्चसर प्रसाध्यः ॥ दसौ घिकं ६० अशीति भूत्वा स्पष्टनतं अंशपलयो गुणयेत् ॥ द्वितीयस्थाने यदंकं वर्तते षष्ठि ६० भागः फलं पतेल्लब्धं यत् पूर्वांस्मि

स्पष्टनत लिखत लाग जारि मोर २॥

नंके जोजयेत् ॥ द्विरवौमध्ये न्यूनं युतं कुर्यात् ॥ पूर्वनते शोधयेत् ॥ अपरनते न दूषात इति ॥ यदि तुद्धिगुर यो
तन्नपतति तदा द्विगुणांभवर्के ५४०० दत्वा शोधयेत् ॥ पश्चात्तत्रभवर्के ०२७०० भोगमाहृत्य चन्द्रग्रहणावसो
न्यथाम्य स्वस्पं ६ हीत्वा स्वदृशांशोनं कुर्यात् एवं नतसरो भवति ॥ नतसर ॥ युतनतन वै ६० गुणा के धरीअ ॥
रविस्फुतायनमहँ उनयुतकरीअ ॥ सौम्यपर वरविद्युनुकरीअ ॥ याम्यपरवमेर इ शोधरीअ ॥ जौन पतरतो
तथिकाकरीअ ॥ वौअ नसपर विसंयुत धरीअ ॥ नवै ९० गुणा तहि सो धर्म्य करीअ ॥ शेष सताइ भाग २७००

१८ ॥ सयपुनिहरिअ ॥ सौम्य याम्य भार शेपुनि पाइ ॥ भार कर क्रम पाइ हते आइ ॥ सताईश सय जेर हइ शेषि ॥ शेवि
पतित उतार वसे षि ॥ दुअहुअ ध्यथोरा जेहहइ ॥ शेइ लेवप रिडत आसकहइ ॥ धरि दुइ ठाव भाग दशली
अ ॥ पावल उपर उनकरीअ ॥ नतसर असता करहो नाम ख्यसि लेइ ली षवहु तहि ठाम ॥ पचक्षभातांश
धिक उद्व २२ भक्त स्तद्दक्षयोगान्तरितो वनं स्यात् ॥ तद्धन्वनं द्विगुणिता २० तं गुणात् ३ पूर्वहीनं धनं प्राक्प
रयोः खरांशोः ॥ २ ॥ पचक्षभातांशाधिक उद्व २२ भातस्य १०० भागेन नतसरं हत्वा शेषां जत षष्ठि ६ गुणा
येत ॥ भातस्य भागे हृत्वा लब्धं यत् तदेव ग्राह्यं एकादशांशे जोजयेत अस्य नामाधिक उद्भ्रो भवति ॥

भा० ६१

६३

अधिक उद्व २२ ॥ दुइ ठाउ कै नतसर धरीअ ॥ सये के भाग पुनि ता हि हरीअ ॥ शेष साठि ६० गुणि सय हरि लेहु ॥ ज
धहि जोरि एगारह देहु ॥ अधिउद्व जानेउ पुनि सोइ ॥ आगिलक्रम कहवौ अनुलोइ ॥ भक्र ॥ अधिक उद्व तें न
तसरहरिलीअ ॥ अधिक उद्व भक्त तहि नाम कहीअ ॥ तक्षयोगान्तरितो वनं स्यात ॥ अक्षा ६० ॥ २२ ॥ धिक उद्
भक्त एकस्मिन् जातौ जोजयेत ॥ भिन्नजातौ यानयित्वा अस्मिन् वृत्ते सैव जातिर्न्दृश्यते ॥ अस्य नामाव
तिर्भवति ॥ अवनति ॥ अधिक उद्व भक्त अक्ष ६० ॥ २२ ॥ तह धरीअ ॥ भिन्न जाति सै शोधल करीअ ॥ जे जा
हि वृत्ते शोताहि वृ ठाउ ॥ पहि महवृत्ते जाति शेपाउ ॥ एक उतारि एक जेरहै ॥ शे अवनतिपरिडत अ
सकहै याम्य नाम योरि असंभारि अवनति परिडत लीषु विचारि ॥ तद्धन्वनं द्विगुणं २० शिता ३ गुणा
पूर्वहीने धनं प्राक्परयो: खरांशो ४ ॥ लम्बनं दृशां १० कै गुणयेत् ॥ त्रयाणां ३ भागे लब्धं यत् तदेव ग
ण्यते ॥ द्विरवौमध्ये पूर्वनते न्यूनं कुर्यात अपरनते जो जोजयेत् ॥ तस्मिन्नवांके तमो जोजयेत् ॥
शप्ताधिकविंशति २७०० २ तं भागं हरति ॥ सौम्ययाम्ययो गति गम्य जायते स्वल्पमंक यद् हितं तदंके
अधिक उद्व षष्ठि ६० गुणायेत् ॥ नतसरः षष्ठि गुणायेत् ॥ अधिक उद्युत ॥ नतसरस्य भागः स्फ यते अधिक उद्व भक्त नाम भवति ॥ अधिक उद्व भक्ते

१८

मा०द०

१७॥

ग्रासम्॥ तद्देवो केद्विविधं कुरु॥ अधोऽर्कं पतद्दशानां भागोऽग्र ह्यते॥ पूर्णस्मिन्नर्के बद्धयेत्॥ अस्य तम
सर नाम भवति॥ तमसरे॥ दशाग्गुणाकृति लाच्छनथिरमान॥ तीनि विभागि लब्धपरमान॥ सौम्यपर वरट
विहीन करीअ॥ याम्यपर भूमेरइ धरीअ॥ ताहि भानुतम लाहु देहु॥ सताइ भासप २७०० भाग हि लैहु॥
लब्ध अंक एकाधिक होइ॥ सौम्य याम्य शर गरिसा अइ सोइ॥ शेष अंक विपरीत उतारि॥ पोरलेव हु
कुमाह विचारि॥ धरिदुइ ठाऽ भाग दश लीअ॥ पावल उपर उनक रीअ॥ शेष रहल पो[illegible]त नाम
सर नाम॥ कहपरिउत आगे विश्राम॥ ततस्तमःसंपृक्तात् शरश्च शरावनत्यनार पृक्स्फुटः स्या
त्॥ तमसरावनतिः पथक् पथक् स्तृपते॥ एकस्मिन् जातो जो जयेत्॥ भिन्नयातो यानयि त्वा॥
यस्मिन् घटते सैव जातिरग्र ह्यते॥ अस्या स्फुट शर नाम भवति॥॥ अस्फुट शर॥ तम शर आवन
ति एक हमेशा॥ दुअहु मेरइ धौ एह उपरहे शा॥ भिन्नभिन्नजौदुहु द्दिशि होहु॥ जे जहि उतर उतारि
अ भोहु॥ जहि मह उतर जाति भेपाव॥ अस्फुट शर कर अनोइ नाव॥ मानैक्यं ग्य भुतांगनन्दा
स्तद्गाहको धस्थितरवं वन्द्रः॥ योऽशाधी १६ कअसीति ८०। रवेर्मानं भवति॥ तस्मिन्मध्येर

१८

राम०

वि रवखंड जो जयेत्॥ अस्येर विमान नाम भवति॥ अग अंक ८६ अनु रवखंड जे भानु॥ तेहि जोरे हो
रविकर मानु॥ रविमान॥ मानंहि मो शोऽग्नि तिरग्नि हीना॥ चन्द्रम शोद्दशाधि १०॥ कं अशी ८०
तिमानं भवति॥ तन्म ध्येत्र यऽन्यूनं कृत्वा चन्द्र रवखंड जो जयेत्॥ अस्य चन्द्र मान नाम भवति॥ व्याम
नन्दा ९०। ठाव एक धरीअ॥ ताहि मह तीसि उतार लकरीअ॥ तीसि उतारि शेष जे रहे॥ शशि
अनुरवखंड योर तहि चहे॥ शशि अनुरवखंड करे हुते हु योर॥ चन्द्र मान लिखहु मत मोर॥ अर्द्धितं तोत्रा
पि शरोनिता न ग्रासो भवेत्त्राकुस्थितिरे वव न्द्रात्॥ ग्रासाब्धि तु घ्नी ४ त्सचितुः स्वशाम ३० ग्रासे कालब्धं स्थितिमर्द्द
लार्द्धम्॥ ४॥ अर्द्धितं तोत्रापि॥ रविमानेन सहे चन्द्रमानं जोज येत॥ द्वितीयस्य भागे ह लाल ब्धं यत अस्य नाम
मा नयोगार्द्ध भवति॥ मानयोगार्द्ध॥ रविकर मान चन्द्र कर मान॥ दुनौ मेरइ धौ दुमिपर मान॥ दुइ विभा
गि लब्ध जे होइ॥ मानयोगार्द्ध लिखहु ताहि सोइ॥ शरोनि नाच ग्रासो भवेत्त्रा कुस्थिति रेव चन्द्रात्॥ अस्फुट
शर॥ मानयोगार्द्धम ध्येपात यित्वा अस्य ग्रास नाम भवति॥ सूर्य ग्रहे सूर्यो सूर्यो ग्राह्ये चन्द्रो ग्राहकः॥
चन्द्र ग्रहे चन्द्रो ग्राह्यो राहु ग्राहकः॥ ग्राह्य ग्राहक योगंकृत्वा अर्द्धयेत॥ मानयोगार्द्धस्यात्तेत्र शरंप्रपात्य

(17)

शेषं ग्रासो भवति ॥ मानयोगार्द्ध लीषि कै घन ह ॥ अस्फुट शर तहि शोधलक नह ॥ ग्रास नाम अवता कर हो
ह ॥ आगिलक्रम कहयौं पुनि सोइ ॥ शर गौपन लमान के पेट ॥ अवसेग ग्रास तहि भौः गौसेट ॥ सरहो व ह
लमान हो थोर ॥ नाहि गह न एह मत मोर ॥ ग्रास द्वतु ४ ब्रासवितुः खरा म ३०ग्रासे क्यलर्ध स्थितिम र्द ला

र्द्धम् ॥ ग्रासस्थान हृये ध्द त्वा पूर्धा शपलयोः चत्वारो ४ गुरायेत् ॥ अधस्थानस्य अंशपलयोः अंशो अंश
त् ३० यो जयेत् ॥ पूर्धे स्व षष्ठि ६० गुरायेत ॥ अधस्थानस्य षष्ठि गुरायेत ॥ अधः स्थाने पदं कं वर्तते
नैवांके नोपरि यो ऽकस्तस्य भागः क्रमात ॥ लब्धं पतनत स्थित्यर्द्धं भवति ॥ स्थित्यर्द्ध ॥ पुनि से ग्रास ठावं दुइ धर
व ॥ उपर अंक शौ वौ ४ गुन करव ॥ हेठ यो रिती ३० सिलेइ द्यो अ ॥ तेहि हेठे उपर हरिली अ ॥ लब्ध अंक स्थि
ति शेआय ॥ तेकर पु न्य र्द्धं ग्य ने ज नाव ॥ अ थास्य र्शमध्यमोक्षानयनम् ॥ अथसौम्यनतम् ॥ धारितं
वृष्टि का दृर्श लम्बनमपि र नारम् ॥ मध्यग्रासः सवि स्तेयः कथितं नतपूर्धके ॥ मध्यग्रासस्य मध्यपः इ
स्थित्यर्द्धं मरांघ्रतम् ॥ मरां स्पर्शं ग्रतं मोक्षं लेखनीयं चपरिगतः ॥ अथसौम्यनते शातिदृर्श वृष्टी ॥ गीरिश
स्थानानि धृत्वा लम्बनमपि त्रीरायेवस्थानानि वयते पूर्धस्मिन्नं के स्थित्यर्द्धं वृष्य तेस्य र्शकालो
व तः ॥ द्वितीयस्थाने यो वर्तते मध्यग्रासो भवन्तिस्म ॥ त्रीतीयेस्थाने स्थित्यर्द्धं जो जयेत मोक्षकोलो

ग्रा०


भवन्तिस्म ॥ धारितं वृष्टि का दृर्श लम्बनमपि जो जयेत् ॥ मध्यग्रासः सवि स्तेयः कथितं नतपश्चिमे ॥ म
ध्य ग्रासस्य मध्येयः स्थित्यर्द्धं मरांघ्रतम् ॥ मरां स्पर्शं पुतं मोक्षं लेखनीयं चपरिगतः ॥ अस्य श्लोक
स्यार्थः ॥ अथ याम्यनते शातिदृर्श वृष्टि त्रीशिस्थानानि धृत्वा लम्बनमपि त्रीरायेचस्थानानि जो
जयेत ॥ पूर्धस्मिन्नं के स्थित्यर्द्धं व ठ्यते स्पर्शकालो व तः ॥ द्वितीयस्थाने यो वर्तते मध्यग्रासो भ
वतिस्म ॥ मध्यग्रासो स्थित्यर्द्धं जो जयेत मोक्षकालो भूत ॥ पक्षादृर्श वृष्टी न्यूनं लम्बनं चेद्धिकं भ
वेत ॥ पत एव वर्तते दृर्शं मध्यग्रासो भविष्यति ॥ इ स्थित्यर्द्धं मरांघ्र क्रं स्पर्शमुक्तिश्च कालयोः ॥
द्विकशर ॥ षोष्ठ भाग ॥ षोष्ठ भाग कृति ॥ नत कृति ॥ वलना ॥ हृतांगुल ॥ शरांगुल ॥ रविमानां
गुले ॥ चन्द्रमानांगुल ॥ ग्रासांगुल ॥ वलनांगुल ॥ प्राक्प्रांगुल ॥ ०॥ सम्व । १५ ८ ४ । शाके । १७ ॥
समये आषाढ वदि अमावास्यायां सूर्यग्रहणं भविष्यति ॥ रवि ध्रुवा । ६ । ३ । चन्द्र ध्रुवा २२
४० ॥ ५२ ॥ केन्द्र ध्रुवा । १० । ३ । ७ । ३६ । पात ध्रुवा । १६ । २२ । ३४ । मास्वा पह र्गराः ॥ ६ ॥ रविषराड श ।
चन्द्रषराड । २ । अस्फुट रवि ॥ ४ । ५४ । ५२ । अस्फुट चन्द्र । ४ । ४५ । २ । पर्वदराड । ६ । ५६ । द्विरवि

२०

भा० टी०
ग्रहनवि०
चार०

९।१२॥२६।तम।१६।७२।२०।दिनार्द्ध।१६।५३।शौम्यनत ७।५६॥स्थिरलम्बन।३।३५।स्पष्टनत।१३।३२।या॥नतशर २७।५५।
याम्याधिकनुद्ध।२३।४५।याम्याधिकनुद्धभक्र।२०।४।याम्यावनति ८०।२६।शौ०।तमशर।११।५।३०।शौम्य॥स्फुटश
र।३५।४।रविमान ९।८।चन्द्रमान।८९।मानयोगार्द्ध।९३।३० ग्रास ५८।२६।स्थित्यर्द्ध२।३८।दिनगत०।४३।स्प

२१॥ र्शः॥दिनगतदराउ।३।२२।मध्यग्रहराम्न दिनगतदयउ६।मोक्षः॥शौम्यदिकशर।३५।६।४३।शौम्यबाह्यभाग४।२२।
शौम्यबाह्यभागस्फुति।१९।४।शौम्य॥नतस्फुति।९९।००।शौ०॥वलना।११६।५४।हतांगुल।४८।१।शौम्य॥शरांगु
ल।४।२२।रविमानांगुल।१२।१३।चन्द्रमानांगुल ११।६।ग्रासांगुल।७।१६।शौ०।वलनांगुल।२१३।प्राक्प्रागु
ल।८।॥२।दिनार्द्ध।२६।२३।समाप्तोयंसूर्य्यग्रहणविचारः॥ ॥द्विद्वादश१२केसूर्य्येजामित्रेसमराशिषु॥षष्ठाष्ट८
६ मस्थस्तथात्रेयोग्रहणाःसूर्य्यचन्द्रयोः॥१॥अस्यार्थः॥राहुकेतुजाहिराशिहोइताहिराशिसेंसूर्य्यदोसरेहोइ।२।
भावारहे १२ होइभासतयेहोइ७।भाएकहिराशिहोइ॥१॥राहुसूर्य्यमाह्यह ६ पे६ आठ८ पैहोइतवग्रहणाकर
योगजानवतवभास्वतीकेशनेविचारव॥२॥चन्द्रग्रहणायोगविचारव॥रविसेंचन्द्रसप्तमे७रविराहुनक्षत्राहि एकस्य ॥
॥ अवसहिग्रहणालगिहै जनिमरि षसीवभान॥२॥अस्यार्थः॥सूर्य्यसेंचन्द्रमासप्तमे७औसूर्य्यराहुएकहिराशि
होथिकिंवाएकहिनक्षत्रहिहोथितौचन्द्रग्रहणाविचारवसर्वदा॥अथसूर्य्यग्रहणाविचारः॥जाहिनक्षत्रहि॥२१
रवितमौताहिअमावस३०।होइकिछुकिछुपरिवासंवरइसूर्य्यपर्वतवहोइ॥३॥अस्यार्थः॥सूर्य्यराहुकिंवा

ग्रहन
विचार०

केतुएकहिनक्षत्रजवहोइतवसूर्य्यग्रहणालागे॥पुरिवासितिथिवेरआद्यतहिपाईतवसूर्य्यग्रहणाकरजोग
जानव॥तत्रवभास्वतीकेशनेविचारव॥०॥द्युतिस्वल्पविचारः॥द्विघ्नोरविपर्धस्फुतापन्न४युक्तोद्विजिनस्तमोष्ठ ८ दिनाधुवाद्यः
तमोयुताकोतरवभाग्न२७००सौम्यंजाम्यंशरोल्पंतदाभांस१०॥हीनेष्टु॥२२॥अस्यार्थः॥सूर्य्यधरवदुइ२केशनेगुराव
पुनिपूर्णाशसौकरदराउपालाधरवचारि४केशनेभागलेवजेभागपाईसेद्वि२वरमाहजोरिदेव॥तवदिराग
राधनवआठ८केशनेगुरावद१०केशनेभागलेवजेभागपाईसेराहुकाधुवामाहजोरिदेवतमहोइहि॥पुनि
तमसूर्य्यमाहयोरवतवसताइ२७००शसइकेशनेभागलेवजेभागपाईसेसौम्यजाम्यगतगम्यजानव॥जेसत
ताइशसे२७०० सेंशोधरहेःतेहिअंकस्वल्पकरवएहितौंसंभारवस्वल्प॥जेऊपरकनअंकवाठसेअंकसताइशसेः
२७०० माहहीनकरवपुनिविचारकरवजौपुनिऊपरकाअंकलेहिहेठकरथोरहोरहोइतौहेठहिकनअंकल्यारा
षवजौऊपरकाअंकलेहिहेठकरअंकपहुतदेषीतौतवऊपरहिकअंकस्वल्पजानवसेइअंकरावस्वल्प
जानव॥पुनिस्वल्पदुइ२हौधरवद१०शकेसनेभागलेवजेभागपाईसेऊपरकाअंकमाहधवटाइदेवसे
२१२ जाम्यशरसेसौंरहोइहि॥१॥मानैहिमांशोर्गतिर्गिनहीना३द्विघ्ना१०वर्तुभिश्च४तमःप्रमाणम्॥तद्यो
गनोर्द्धःशरवर्जितंचग्रासःशूर्यांशोःस्फुटपर्वसन्धौ॥२॥अस्यार्थः॥नवे९०मांहचन्द्रमाकनअनु

॥२२॥

षराज जोरव सेव चन्द्र गति होले ॥ से अंक धनव पुनि तीनि ३ घटाइ देव पुनि दुइ २ ठौ अंक धनव हेठ कन अंक दश के १० सनो गुरा वपूनि चारि के ४ सनो भागलेव जै भाग पाई से तम होइ हि। से तम अग्नि ३ हीन गति उपरकन अंक वाढ ताहि अंक माह जोरि देव तम ॥ से मानद्रूप अंक होइ हि॥ पुनि मानद्रूप अंक आधा कन व से अंक माना द्रू होइ हि॥ ते हि मानाद्रू माह शर घटाइ देव॥ घट लाप न जे अंक रहे से अंक के ग्रास होइ हि॥ जौं मानार्द्ध माह शर नाही पनै तौ तौ ग्रह सा नाही लागे॥ शर होइ वहुत मरा नाही इ थोरा नाही ग्रह राडु है मनतमो रा ॥२॥ स्थित्यर्द्धं मंगोहतं द्विमिन्दु षरांड खप च्च ५० संयुक्त खराड विखरिडत व ॥ हीनं धनं पद्वि रा भी ततरस्मेः स्यर्शो यमुक्ति श्च तद्दि छ कालः ॥३॥ अस्यार्थः॥ चन्द्रमा कन अनुषराज न वे ९० माह जो नलवाढ से इन्दु षराडा हो अइ॥ इन्दु षराडा दुइ २ ठौ धनव॥ पुनि उपरकन अंक छ वढ़ के सनो गुराव हेठ के अंक माह पावस ५ जोरव ५०० तवदु औ अंक साठि ६० के सनो गुरा व भागलेव जे भाग पाई से स्थित्यर्द्ध दराड पाला हो इ हि॥ तव पौरा वासी कदराड पाला धनवदुइ ठौं २ एक ठैं स्थित्यर्द्ध घटाइ देव से स्पर्श होइ हि दोसरी ठौं जोरि देव से मोक्ष होइ हि॥३॥ विशत्या २० गुणीतात्तौ ग्रासः मानां के न विभाजितः॥ अस्या

द्रू ६

॥२२॥

भा०१ ग्र०१० न०१० घा०१०

६२

विश २० के सनो ग्रास गुराव चन्द्रमा राा के सनो भागलेव जे भाग पाई से विश्वा होइ हि॥ विशि २० अंगुल कन स्पर्श चन्द्र ते हितें विशि २० वीश्वा होइ तौ सर्वग्रास होइ हि॥ जौं सौम्य शर होइ तौ पूर्व उत्तर के कोरा ग्रह रा लागे ला॥ जौ जाम्य शर तौ पूर्व दक्षिरा के कोरा चन्द्र ग्रह रा लागे ला॥३॥ खखेन्दु वेदाधिक वासरः स्यात्प्राग्वत्भ वक्राप्त दिशः ४७०० दिशः शरध्रुव तत्रवाह ८० भागस्य कृतिः धांशो व्यथा दिशं व्यस्तमितः मध्यं दिना प्राक्य नतस्त सौम्य नतं स्याद्द्युनत कृतिश्च॥४॥ कृत्योस्त तुल्या न्यदिशः क्रमेरा यो गान्तरम्या वलः नाग विन्दो ४॥ व लक्षा सा कृतानि ध्रुवाते नांशोन पले नतू षष्ठी ६० भागं द्विकं जौं ज्यं पुनः षष्ठा यो जयो कृतिः॥५॥ ॥ इति श्री पंचसिद्धान्त्या सौर्य्ये चन्द्र ग्रहाधिकारः षष्ठः ॥ तिथिर्यातिर्दिनार्द्धघ्ने नतं से यंतदूलरंम॥ दिनार्द्ध तिथि मध्येतु जातियाम्यं पदातदा॥१॥ अस्यार्थः॥ तिथि थोरी होइ दिनार्द्ध वहुत होइ ० तौ तिथि कर दराड घटाइ देव से अंक सौम्य नत होइ हि। जौं दिनार्द्ध थोर होइ तौ तिथि माह घटाइ देव ० से अंक जाम्य नत होइ हि।१॥ नता दश ध्रुवा १० जिनपुक् २४ नतौ पृनं दक्षम्व नंते नयुतं नतं च॥ जावत्सम त्वामुपैति कुर्य्यात्ता वत् फलं भास्वती सौम्य जाम्य म्॥२॥ अस्यार्थः॥ नतदुइ २ ठौ धनव ततव उपरकन अंक दश १० के सनो गुराव हेठ के अंक माह चौविश २४ जोरि देव। तव हेठ के सनो उपर माह भागलेव जे भाग पाई दराड पाला- से लम्बन होइ हि॥ से ल

दुसर उपलम्ब पीकन ततव भागलेव ३॥



२२

२३॥

म्बनप्रथमनतमाहजोरिदेवसेअंक द्वितीयनतहोइहि॥पुनिपुनिएहितरहगूराव १० ओरव २४ भागलेवद्विती
य॥त्रतीयलम्बनओनतआवतजाइहिजबलेहिबराबरिहोइहितबलेहिआनव॥तवनतनतलम्बन॥लम्ब
नसमहोइहि।सेस्थिरनतओलम्बनसौम्यजाम्यहोइहि२ततखाङ्कनि ९० घ्नोनयुतस्यभानोः प्राचीप्रतीच्यो
श्चभारप्रभाध्वः॥पृथक्शतांशा १०० दिकनुद्वृ १ भक्तः तद्दक्षिणोगा ६०।२२ नरितोनतस्यात्॥३॥अस्या
र्थः॥स्थिरनतधरव ९० नवेकेसनोगूराव॥तवद्वि२घ्नूरविपर्ध्वक्तो ४ प्रयुक्तेऐसनस्पष्ठमाहजौसौम्य
नतहोइतौस्पष्ठमाहखाङ्क ९० घ्नूअंकघटाइदेव॥जौबढैतौभलैहोतौघटाइदेव॥औरखाङ्कनिघ्नूनतक
दाचितनघ्टैहिघ्नूरविपर्ध्वक्त तापूप्तमाहतौचौआनसे ५४०० जोरिकैघटाइवखाङ्कनिघ्नूनतजौ
याम्यहोइतौजोरिदेव॥तवसेअंकधवसताइससैइ २००० केसनेशारसाधवपूर्ववास्वस्यनाघवस
रहोइहि॥सेप्राचीप्रतीचीशरहोइहि॥सेसरदुइ २ ठौधनवहेठकेअंकमाहसे १०० केसनेभागलेवजेभा
गपाईताहिमांहएगारह ११ जोरिकेतवउपनकरअंककाढजेताहिएहिअंकेभागलेवजेभागपाईसेसा
ठिबाइसि ६०।२२ मांहजौसौम्यभारहोइतौघटाइदेव॥जौजाम्यभारहोइतौजोरिदेवसैअंकसौम्यजा
म्यनतिहोइहि३॥तंछलम्बनदिग्गूरिता १० तंगूराप्तहीनंधनंप्राक्पनयोःखराभ्रोः॥ततस्तमसंप्रा २

२६०

प्तान्कांशयश्शशाचराम्य नयुक्स्फुटस्यात्॥४॥अस्यार्थः॥लम्बनधनवद २१० सनेगूरावतीनि३
केसनेभागलेवजेभागपाईसेअंकद्वि२घ्नूरविपर्ध्वक्ततापप्रयुक्तमाहकरवजौसौम्यलम्बनहोइतौघटाइदेव॥
जौजाम्यलम्बनहोइतौजोरिदेवसेअंकप्राकपरस्पष्ठहोइहि॥पुनिद्विनगनधवआठ ८ केसनेगूरावद
शकेशनेभागलेवजेभागपाईसेराहुकाधुवामाहजोरिदेवसेतमहोइहि॥प्राकपनस्पष्ठमाहजोरवपुनिशन
साधवपूर्ध्वास्वल्यकरवपुनिजौसौम्यशरहोइओसौनतिहोइतौजोरिदेवनतिमाह॥जौजाम्यशर॥होइओ
जाम्यनतिहोइतौजोरिदेवनतिमाह०जौविपरीतहोइएकसौम्यम् कयाम्यहोइतौजाहिमाहजेपरेसेघटाइदेव
सेस्फुटशरहोइहि॥४॥मानंरवेर्भौगपंप्तांग ७६ नन्दस्तद्वाहकोधास्थिरएवचन्द्रः॥ग्रासभ्चतद्घ्नाः ४ सवितुः
खरामं ३० ग्रासैकलच्छंस्थितिमं द्लाढ्र्मूधघ्न्॥अस्यार्थः॥रविकरअनुभंजछानवेमाह ७६।जोरवसेरवि
माहनहोइहि॥पुनिचन्द्रमाकरअनुभंगनवेमाह ९० जोरवओतिनि ३ घटाइदेवसेचन्द्रमानहोइहि॥पुनि
रविमानचन्द्रमानमाहजोरवसेविमानद्वयजोगहोइहि॥पुनिमानद्वयआधाघटाइदेवसेमानार्द्ध
होइहि॥पुनिमानार्द्धमाहस्फुटशरघटाइदेवसेग्रासहोइहि॥जौशरनाहीघटैतौग्रहणनाही

ग्रा
ने०
ह ४ चारि के सनो ग्रासाव ग्रास एक आगह ३० ती
लागै॥ अरहोइ बहुत माहोइ ग्रास दुइ आगह घनघ एक जा
सजो भग ग्रास माह जो हि ग्रास माह तीस ३० जो नलहै तेहि कसनो भाग लेब जे भाग इ से स्थित्यर्द्ध होइ रा ना
हिगह ग्रानइ है मतमोर॥ ६ आउ पलभ पीकर वत न भाग लेब पुनि ग्रास घनब चारि के सनो ग्रास पुनि
ग्रास माह तीसि ३० जो नवते हि अंकके सनो भाग लेब जे भाग पाई से स्थिति मर्द्ध लाई होइहि॥ ५॥ इति इहस
र्व ग्रह सो विश्लेषः शेषाः स्तू चन्द्र ग्रह राद्धि विन्याः॥ स्थितिः स्वभानेन हतार विन्दोः ग्रासेन लब्धं
मतनः प्रकुर्यात॥ स्पर्शो ग्रथमोक्ष स्वम सांत तो स्यात॥ निमीलनोन्मीलन को भवेन्नाम॥ ६॥ अथस
सगोप्यवार्ता॥ लम्बनेसदाही नंकार्त्यपूर्वे पर्धणि॥ लम्बनेन नदाप्रकार्त्य पर स्पर्धे शि॥ ७॥ अस्यार्थ
इ निश्चय जानब जे पूर्वान्हे सूर्य ग्रहरा कै योग होइ तो अमावास्या के दराड माह स्थिर लम्बन घटाइ देब जो
पराह्ने सूर्य ग्रहरा कै योग होइ तौ स्थिर लम्बन अमावास्या के दराड पाला माह जोरि देब तब स्थित्य
स्थिरन २ ग्र उ घटाइ बातेहि दराड उपर स्पर्श होइहि एहि बात उपर विंडी लाइ चपनि क्षाप नुले वाटीभूता

नाहीपरब　　म नाहीपरब २॥

जौ पूर्वान्हे ग्रहरा लागइ तौ अमावास्या के दराड माह॥ लम्बन घटाइ लेब तब स्थिति मर्द्धल घटाइ दे
बसे स्पर्श होइहि॥ जौ पराह्ने ग्रहरा लागइ तौ स्थिर लम्बन जोरि देब तब स्थित्यर्द्ध घटाइ बताहि
दराड उपर अमावस के स्पर्श होइहि॥ ७॥ इति श्री भास्वत्यां सूर्य ग्रहराधिकारः सप्तम ७॥
मानं च रादेः स्वनतस्य पंच ५ भागो द्विक् १०२ बहु ताङ्लाघाः॥ चन्द्रार्कमानाङ्गुल संग्रहा सा
खरवाग ७०० भक्ता दलनाङ्गुलानि॥ १॥ शरश्चन्द्रः समो ग्रासः भजन्दि कस एते बष्टि ६० गु
रााकार्यहृतांगुलविभाजिताः॥ चन्द्रार्कयोर्द्युक सरमराड लस्य सव्या बसेव्यं वलनाग्र सूत्रं॥
मध्यादुदग्दक्षिणतः सरानात्तमोद्भुसजेरा रवीन्दु खराड॥ स्पर्शे स्थित्यर्द्ध निघ्ने शर ५ घ्ने
द्व४ भक्तै मर्नांगुलैः प्राक् परतो सतत द्व्यात्॥ स्पर्शोऽथ मुक्तिश्च तदिष्ट कालमिन्दु ग्रहे
उर्क ग्रहतो प्रक्षेपात्॥ ३॥ वलनाग्राग्रे लंदे पंतद्विक्षे ये क्षतापाहि॥ भेदेन पूत्यङ्

२५॥

मूखंदेप्रमिन्द्रोर्भानोर्विपर्य्ययात् ॥४॥ शारदूँवलनयोर्द्दि१भेदे प्रागदेयं वलनां ऊलम्॥ अथश्चादे क
द्दिदेपं चन्द्रे तद्दूपति तं सूर्य्यै सोऽयमिरे ॥५॥ सम२६ रामिगते ऽथ वार्त्ताथाब्धाब्धा ।द।८। केचै वय
ग्रहरां चन्द्र सूर्य्य मोः ॥ खखा भिवेदा ४२०० ऊगते युगाब्दै देव्यो क्तितशीपुरु बो तमः स्यां
त् ॥ श्रीमान् शातानन्द इति प्रशिद्धः स्वर स्वती शंकर योस्तनूजः॥६॥ ० ॥ इति श्री पंच्च सिद्धान्ते
सौर्य्ये परिलेखकाधिकारः अष्ठमः समाप्तः ॥ ० ॥ सकेन्दुकाला त्खशराद्विहीनात् ॥ ४५० ष
ब्ध्याप्त ६० संख्याय नांशकाद्युः ॥ व्हद्धिः परा सिद्ध २४ समा ततस्तु ते षां त्रुटि श्चेति यथा क्रमेण ॥ १॥
शशाङ्कहीनः सकलस्य कालः कथितः कृतासौ ॥ अथ सार णी सषा वग्गनु कर जे पति वरिस ध्रुवा
व द्दूइ लो सेकहिला ॥ मंगल ॥ ६३८।२॥ बुध १८४३७। व्हहस्पति। १०२।१०॥ शुक्र। ७५०।३७।॥ श
नि। ४०।४३॥ राहु। २६०।२३॥ रविके ध्रुवामाह एक १ अंश पंचावन ५५ पाला द्व दाइ देवसे स्त
र्य्य कर आगिल ध्रुवा आइहि॥ चन्द्रमा ॥ ९७०।१७। जोर व पुनि अंक व हुत वढइत व शात

॥२५

इश्रासइ २७०० के सनेशे ष भभाद्दि॥ रास्वाद्दि वान हसइ के १२०० सनेशे षवपति वर्ष॥ वर्षाधिप
२ पराशीस स्वयुक्तं तद्धूंशराधि ३ कं ५ वानेन्दु भिश्च १५ हरे न्मागं शेषं लाभो व्ययो लाभः॥१॥ अ
स्यार्थः॥ वनघ कन राजा औ राशिक रस्वामी जोर व पुनि तीनि ३ के सनेगूराव पुनि पां च जो
निदेव पुनि पंद्रह १५ के सन्ते भाग लेवजे भाग पाइ से व्यय होइहि जे शेष अंक रहै से अघाप०॥
२६। चा १ यामं। ८। बु। १७। व्ह १९। शु। २२। श २०। राहु १२। इहै ● जोनव॥ शाकस्त्र ३ गूरोपा
नग भाजि ७ नश्च शेषो बोद्धि २ नि घ्नौ शरसंयुतो पि ५ लाभस्तु शाकः पुनः प्रकल्प्यः तथैव
गूरोपा नग ७ भाजितश्च॥ २॥ अस्यार्थः॥ शाके धनवती नि ३ के सनेगूराव सातं ७ के सनेभा
गलेवजे शेष अंक रहै से दुइ २ के सनेगूराव पुनि पांच जोरि है व से व र्षा आइहि॥ पुनि
ओ लाभ अंक वाढ साके कै मान व पूर्ववत् गूराव इभा ७ गलेव एवं वर्षाधिपति लेहि॥
पुनि एवं एक कई व ढाइ है व २६ समआइहि॥ ३॥ वर्षाधारांपत्र रां शीतं वायुरुष्णतेजसः॥

28

मंत्री०

ष्ठ योविग्रहश्च ॥पापंपुन्यंतथाक्षीरं तैलकर्प्पासमेवच॥ क्रमो मन्तश्चैषां विषसंधिश्च तत्पर्थांशेन गम्यते ॥१॥ अर्धेन्दुपातास्तिथिभि १५ करघ्ना २ ग्रहगुण्या ३ सूनोतिथिभि १५ चलघ्नंत्रिंशंशा ३० क्रमात् ॥२॥ मेषके शंक्रांति जोहिवार होइ से मंत्री होइ॥ वृषके संक्रांतिकवार से जलाधिप होइ॥ कर्ककी संक्रांतिवार स्याधिप होइ॥ साके धनध १५ जोरव पुनिचारि ४ भागवजे भागपाई से धराजा होइ॥ जै एक शेष रहै तौ १ आवर्तको नाम होइ॥ जौ २ रहै तै समावर्तक नाम॥ जौ तीनि ३ रहै तौ पुष्कर नाम जौ ४ रहै तौ द्रोणा नाम होइ॥ तस्य फलम्॥ आवर्ते मध्यमा वृष्टिः समावर्ते सुपूरकः॥ पुष्करे दुःकरे वारि द्रोणो वृष्टि निरंतरम्॥१॥ शाकमिन्दु १४ जगो क्रावास्युर्ते नैषुवे २२ भाजितः॥ सनागचवियो योसकु धाढ्यचाक्रमम्॥२॥ स्कुद्धौ नन्दसारं च २ कन्याह्नुछः ३ पयुस्त्रा वा ४ वासूकी ५ नघकं ६ वैरकलकं च ७ तापाम्बुजः ८ हेमाली ९ विलम्बचे १० आवर्तव ११ वज्रि १२ ष्ठिक १२।१२। अन्यरास्यातनग्रहजमनप्रकारः॥ वेदाध्वना

॥२६

२६॥

र्के ४।१७६ इन्दु वृष्टी खतर्क ६० भौमत्रयं ३ चन्द्रजतर्क खाब्धी ६।४० गूरौव जातिः ०।२२ भृगूवा नत्रपंचपा ७५।२० मनि ष्व वेद ०।७ रवतिथेच नाकुः॥१५॥ आको दिनवग्रहमो जगक्रान्ति द्रव्यपाला इति॥ स्फूर्त्य कर आनष राज्य के सन्नेवपालि सिष्व ४२० गूराव दशके १० सैं नवेभाग लेव जेभागपाई से पाला होइहि॥ श्रीसात्त्व सस्र्य निति वैठलो ७१६। स्फुट ग्रहकन भोग पांशक धनवस्फुट अमुनिको के सनेभाग जेपाई से दिन होइ० से षसाठि के सन्ते सन्ते गुर ६० राव भनिको के सने भाग पाई सेद्रव्यपालाहोइ॥ से जो हि दिन गरा कर आनीताहि दिनक रहोइहि॥ से आगिलनाम्नि श्रात श्रौनछ त्रगतहोइहि भौमादिपंचकम्॥ ॥ ॥ इति श्री भास्वती समाप्ता षट्प्रकरणम्॥ श्रीमत्पारिस्ताविश्वनाथे न भास्वत्याः भाष्या विरचिता॥ सूभमस्तु॥ कष्टेन लिखितं ग्रन्थं पालनेन परिपालयेत्॥१॥ सम्वत् १८ ८५। साके १७५० समय महामङ्गलप्रदे फाल्गुनेमासि कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां चन्द्रवासरे मिदं पुस्तकं लेखितं मगल लालस्वर्म्मने ग्रामे रिठि स्वपाठार्थः परपाठार्थः॥

भा० टीका
भा० टीका

पीनीसाहनकापहनकेहुदेषेनाहिपावे२

सेमरकेदुसाआतथानके मंगनकेलेआवेकेपडधमुहेपछुआबोलिके तवतेलिकाकोहुआधनमेकाहुआनी
मे वोसि हेत वतेलनाहिहुयै ॥२॥ धन। धबुरकेवंदा आतथाचमंगनकेलेआवेतेलीकाधनमेकोहुकाहु
आनी फाहुमे वोसिदे तवतेलनाहिहुयै ॥२॥ अथधा ॥ पानके हाडले आवे कोहु काधनहु आनीछा
हुमेवोसेनवतेलनाहिवये ॥३॥

॥२८॥

आदित्ये वित्तविनाशनं प्रकुरुते धर्मार्थकामौ शशी भौमश्चाप्यभिघा
तमरणं चन्द्रात्मजे सम्पदः ॥ मन्दे मन्दगतिर्गुरुश्च विभवं राहौ भवेद्धनं भृ
गौ स्वर्ण सुखं करोति नियतं ग्रामस्य वा सेफलम् ॥१॥ वसु ८ वारा धरसाद्भौ धि ४
सप्त ७ चन्द्रा २ ग्नि ३ बाहवः ॥ ग्रामनामदिशा मैक्यमष्टभि ८ र्भागमाहरेत् ॥२॥

॥२८॥



२१